शोध पत्र–हिन्दी

SEPT—2009

सुशील कुमार 'शीलू' के काव्य में सामाजिक समस्याओं का उद्‌घाटन

संगीता राव

अतिथि प्राध्यापक, अहीर कॉलेज, रेवाड़ी (हरियाणा)

सुशील कुमार 'शीलू' जीवन परिचय

हरियाणा की पावन धरा पर जन्म लेने वाले 'सुशील कुमार' का नाम साहित्यकारों में सर्वोपरि है। महान् साहित्यकार 'सुशील कुमार' का जन्म 23 अगस्त सन् 1976 को हरियाणा में नारनौल तहसील के अन्तर्गत गांव मंडलाना में हुआ। इनके पिता का नाम श्री हरफूल सिंह कलानियां है। सुशील कुमार जी की माता का नाम श्रीमती केसरी देवी है।

शिक्षा–दिक्षाः–युवा साहित्यकार 'सुशील कुमार जी' प्रारम्भिक शिक्षा गांव सिलारपुर महता स्थित प्राथमिक पाठशाला में हुई। 'शीलू' जी ने दसवीं की परीक्षा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, निवाजनगर से उत्तीर्ण की। इसके पश्चात् 10+2 की परीक्षा हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड से उत्तीर्ण की तथा डी.एड(जे.बी.टी) ऐलनाबाद(सिरसा) से उत्तीर्ण की। उपर्युक्त शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् इन्होंने अध्यापक के पद को ग्रहण किया। मनोविज्ञान में विशेष रूचि होने के कारण इन्होंने स्नातक की परीक्षा मनोविज्ञान में ही महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से ग्रहण की। तत्पश्चात् कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की परीक्षा हिन्दी साहित्य में पास की। 'शीलू' जी ने उर्दू भाषा में सर्टिफिकेट कोर्स किया। 'सुशील कुमार' जी सन् 2006 में राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) भी उत्तीर्ण कर चुके हैं।

व्यवसाय :– 'सुशील कुमार जी' ने अजमेर रेलवे में प्राथमिक शिक्षक के लिए परीक्षा दी और प्रथम प्रयास में ही इनका चयन शिक्षक पद पर हो गया। दो–तीन माह इस पद पर सेवा कार्य करने के पश्चात् चंडीगढ़ प्रशासन में प्राथमिक शिक्षक पद ग्रहण किया। परन्तु उक्त पद ग्रहण करने के दो दिन पश्चात् ही हरियाणा शिक्षा विभाग में जे.बी.टी. अध्यापक के पद पर चयन हो गया। अक्तूबर 2000 में इन्होंने राजकीय प्राथमिक पाठशाला, सिलारपुर महता में प्राथमिक शिक्षक के रूप में पद ग्रहण किया। गर्व की बात यह है कि जहाँ 'शीलू' जी ने स्वयं प्राथमिक शिक्षा ग्रहण की वहीं से उनकी व्यवसाय की नींव रखी गयी। सन् 2000 से आज तक 'शीलू' जी इसी पाठशाला में कार्यरत है।

साहित्यिक प्रेरणा :–किसी ने ठीक ही कहा है *'होनहार बिरवान के होत चिकने पात'* यह उक्ति सुशील कुमार जी पर पूरी तरह चरितार्थ होती है। सुशील कुमार जी का साहित्यांकुर उस समय फूटा जब ये तीसरी कक्षा में पढ़ते थे। 'शीलू' जी ने अयोध्या सिंह उपाध्याय की कविता 'फूल और काँटे' तथा 'एक तिनका' पढ़ी। इन्हीं कविताओं ने 'शीलू' जी को प्रभावित किया। 'शीलू जी' समाचार पत्रों में प्रकाशित रचनाएं पढ़ते थे। इसके साथ–साथ रेड़ियो से प्रसारित साहित्यिक रचना सुनने के भी शौकीन थे। साहित्य लेखन कार्य इन्होंने कॉलेज की पत्रिका 'त्रिधारा' से प्रभावित होकर शुरू किया जिसमें इनकी रचना भी छपी। 'सुशील कुमार' जी राजेश जोशी, मुद्राराक्षस, खुशवंत सिंह, रामकुमार आत्रेय तथा राजेन्द्र यादव आदि लेखकों से भी प्रभावित हुए।

पुरस्कार–साहित्यकार 'सुशील कुमार' ने हिन्दी गद्य व पद्य दोनों विधाओं पर लेखनी चलाई। विद्यालयी स्तर में मेधावी रहे 'शीलु' जी ने विद्यालय कालेज व शिक्षण

संस्थाओं में अनेक साहित्यिक व सांस्कृतिक गतिविधियों में अग्रणी रहे।

सुशील कुमार 'शीलू' के काव्य में सामाजिक समस्याओं का उद्‌घाटन :–'सुशील कुमार जी' ने पुलिस विभाग, आचरण, खोखली राजनीति और खंडित एकता को जनता के सामने चित्रित किया है। लोकतंत्र में चुनाव का विशेष महत्व होता है लेकिन भारतीय चुनाव में धर्म तथा साम्प्रदायिकता का प्रवेश सरकारी तंत्र का दुरूपयोग, मतदाता सूचियों में फेरबदल, धन की विसंगतियां दिखाई देने लगी है। पूंजीवादी जनतंत्र में धन की शक्ति पर चुनाव लड़े जाते है। सत्ताधारी नेता जातीयता को बढ़ावा देते हैं। राजनेता दल–बदल की नीति को अपनाता है। राजनैतिक दलों में सिद्धांतो की जगह स्वार्थो की खातिंर की जाती है। पिछले बरस हो गया अपना प्रमोशन जब लड़ा था हमने इलैक्शन शिष्य! छल कपट से विजेता हो गए यानि हम राजनेता हो गए.... जनता को लूटना हम सबका परम अधिकार।[1]

सुशील जी ने यह भी चित्रित किया कि किस प्रकार नौकरी भी राजनेताओं की चापलूसी करने से और घूस देने से मिल सकती है जैसेः– आसान नहीं आजकल नौकरी लगवाना परन्तु हमारा काम करवा दूंगा एक नोटो से भरा सूटकेस दे जाना।[2]

चुनाव निशान है जोंक/सबकी आँखों में धूल झोंक /लायेंगे कंगाली/हर सौदे में खायेंगे दलाली [3]

साम्प्रदायिकता–साम्प्रदायिकता राष्ट्रीय एकता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। साम्प्रदायिकता से सत्ता की बरखा आते ही वे विशाल वृक्ष बन जायेंगे और हम विश्वस्त, सभ्रात बेईमान कहलायेंगे। [4]

हमारा विचार है/जनता लाचार है/भगवान धर्म, जाति के नाम पर/हम लड़ते है/वे लड़ते है।[5]

इस प्रकार भ्रष्टाचार मूल्यहीनता की स्थिति है। अपने स्वार्थ के लिए नेता समाज व राष्ट्रीय हितों को खाने के लिए तत्पर है। भ्रष्टाचार, कालाबजारी के कारण समाज (राष्ट्र) की नींव खोखली हो गई।

पुलिस प्रशासन–पुलिस प्रशासन भी भ्रष्ट हो चुका है। जहाँ देश की सुरक्षा व शान्ति की जिम्मेवारी पुलिस को सौंपी जाती है लेकिन पुलिस विभाग रक्षक की जगह भक्षक बन गया है। पुलिस विभाग में रिश्वतखोरी, भाई, भतीजावाद व राजनैतिक संरक्षण जैसी बुराईयों को पाला जाता है। पुलिस विभाग जनता पर अपनी शक्ति का प्रयोग मनमाने ढंग से करता है। 'शीलू' जी ने 'सौ करोड़ का मौन' कविता में इस अव्यवस्था का पर्दाफाश किया हैः– तुम मुट्ठी भर भ्रष्ट और बेईमान/विराजमान हो शीर्ष पर/सर्वनाश कर रहे हो देश का/हमारा ही रक्त पीकर रहते हो जीवित सौ करोड़ की भीड़ सब कुछ जानकर भी मौंन है।'[6] 'शीलु' जी ने जनता को उनके अधिकारों के प्रति प्रेरित किया है। 'जीव–जन्तु महासम्मेलन' में उद्‌घोष किया है–

साथियों!/हमें हमारा हक/अवश्य लेना होगा/ एक दिन इंसान को/इस आरोप पत्र का/जवाब देना होगा।[7]

पुलिस स्टेशन रिश्वतखोरी के अड्‌डे बन गए। पुलिस को रिश्वत देकर बड़े से बड़ा अपराधी स्वंय को निर्दोष साबित कर देता है। राष्ट्र में चारो तरफ भाषावाद, जातिवाद, साम्प्रदायवाद फैला हुआ है। इन सभी बुराईयों को लेखक अपने साहित्य के द्वारा जनता के सम्मुख प्रस्तुत करता है और शोषण के विरूद्ध क्रान्ति के लिए प्रेरित करता है कि पीढ़ी दर पीढ़ी मौन ठहरो अब विद्रोह जरूरी है।[8]

बेरोज़गारी–बेरोजगारी की समस्या न केवल आर्थिक जीवन को प्रभावित करती है अपितु सामाजिक व्यवहार को भी प्रभावित करती है। बेरोजगारी के कारण व्यक्ति में हीनता की भावना आ जाती है। देखो भई आसान नही आजकल नौकरी लगवाना परन्तु तुम्हारा काम करवा दूंगा एक नोटो से भरा सूटकेस दे जाना।[9] भारत में बेरोजगारी की समस्या इतनी विकराल हो चुकी है कि आज करोड़ो युवक रोजगार विहीन है। रोजगार पाने वाले अधिक तथा नौकरी देने वाले कम है। 'तालों में बन्द प्रजातन्त्र' में इस पर कटाक्ष किया गया है जैसे–

लाख योग्यता है पर उसको चाटोगे क्या?/किलो के भाव घूम रहे हैं एक से एक।[10]

महंगाई–आर्थिक तंगी देश को प्रभावित करती है। रोजगार विहीन होने पर और उस पर बढ़ती कीमतों के कारण आम मनुष्य अपनी इच्छाएं पूरी नहीं कर पाता।

मजदूर वर्ग हमेशा महंगाई का शिकार होता है। उच्च वर्ग पर महंगाई का इतना प्रभाव नहीं पड़ता जितना निम्न वर्ग पर। महंगाई के कारण आदमी की कीमत वस्तुओं के मुकाबले घटती नजर आ रही है। भौतिकवादी संस्कृति को छोड़ कर हर आदमी दौड़ रहा है लेकिन दौड़ वह जीतता है जो आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न है तथा धन प्राप्ति की इच्छा मनुष्य को धूर्त, स्वार्थी व अवसरवादी बना देती है। जो मिले सो मेरा तुम्हारा चुनाव निशान हो जोंक सबकी आँखों में धूल झौंक लायेंगे कंगाली हर सौदे में खायेंगे दलाली।[11] आर्थिक सुधारों के नाम पर निम्न वर्ग किसान व मध्यवर्ग का शोषण होता है। गठबंधन कविता में अर्थव्यवस्था को महत्व देते हुए कहा है– तुम मेरी जिंदगी में 'बहुर्राष्ट्रीय कम्पनी' की तरह आ जाओ और मेरी अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बना जाओ।[12]

अलगाववाद–शोषक व शोषित वर्ग में अंतर इसलिए है क्योंकि शोषित वर्ग में एकता का अभाव है। लोभ के वशीभूत होकर व्यक्ति समूह से अलग हो जाता है और संघर्ष के लिए तैयार नहीं होता। जिससे अलगाववाद की भावना उत्पन्न होती है। इसलिए शोषित वर्ग में चेतना जागृत करने के लिए तत्पर है। कवि पुराने समय से चली आ रही कुव्यवस्था से दुखी होकर इनके प्रति विद्रोह को आवश्यक मानता है। 'परम्पराओं के इस कुशासन के खिलाफ पीढ़ी दर पीढ़ी मौन ठहरो। अब विद्रोह जरूरी है।[13]

दलित वर्ग–मानविकी हिन्दी कोश के सम्पादक रामचन्द्र वर्मा के अनुसार ''चेतना मन की वह वृत्ति या शक्ति है जिससे जीव व प्राणी की आन्तरिक अनुभूतियों, भावों विचारों आदि और बाह्य घटनाओं, तत्वों या बातों का अनुभव या ज्ञान होता है।[14] चेतना मानव मस्तिष्क में निहित एक ऐसी शक्ति है जो उसे भले बुरे का ज्ञान करवाती है, उसे स्वयं के प्रति तथा आसपास के वातावरण के प्रति सजग करवाती है। चेतना ही व्यक्ति को देखने, सुनने एवम् विभिन्न विषयों पर विचार करने की शक्ति प्रदान करती है। सुशील कुमार 'शीलू' की कविताओं में दलित चेतना कूट–कूट कर भरी हुई है। इनकी कविताओं का मूल स्वर भी दलित चेतना से जुड़ा हुआ है। 'ठाकुर का कुआँ, डंडा' 'अब विद्रोह जरूरी है', 'दंड–विधान', 'अछूत' आदि कविताएँ दलित–चेतना से सम्बन्धित हैं।

'अब विद्रोह जरूरी है' कविता के माध्यम से सदियों से दमित, शोषित जाति को कुव्यव्यवस्था के खिलाफ लड़ने को उत्प्रेरित किया गया है। कवि का कथन है–

''सदियो से तुम्हारी कौम/नीच, अपवित्र, तिरस्कृत/ जिसे जन्मजात राजाओं ने/अंधकूप में धकेल/श्रद्धा और संस्कारों के छल से/किया निरन्तर शोषण/परम्पराओं के कुशासन के खिलाफ/पीढ़ी–दर–पीढ़ी मौन/ठहरो!/ अब विद्रोह जरूरी है।[15]

इसी प्रकार 'डंडा' कविता में कवि ने दलित जागृति को दर्शाया है। उनका कहना है–

करमजली!!!/अफसोस सारे गाँव को है/रिश्तेदारों–दोस्तों की तो बस पूछिये मत/घर में मातम।[16]

'प्रेम कहानी', 'दंड विधान', अंर्तरजातीय विवाह को स्वीकृति देती कविताएँ हैं। इसी प्रकार 'शपथ–पत्र' पुरूष–प्रधान समाज के विरूद्ध एक जंग है।

घर से बाहर निकलते ही/तुम्हें मिलेंगे कुछ भूखे लोग,/वैसे तो वे अकसर खा–पीकर ही निकलते हैं/पर इतना लजीज व्यंजन देखने के बाद/आ ही जाता है मुँह में पानी [17]

नारी का शोषण–आधुनिक समय में भी नारी के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं जिनसे वह अभी तक उबर नहीं पायी है। कानूनी दृष्टि से अधिकारों से सम्पन्न होने पर भी सम्पत्ति में नारी के अधिकार को सीमित ही माना गया है। जहाँ तक सम्पत्ति में नारी के अधिकार की बात है, उसका अधिकार नाम मात्र है। 'विश्व में आज जितनी सम्पत्ति है उसके 99वें हिस्से पर पुरूष का अधिकार व स्वामित्व है और केवल एक प्रतिशत की मालिक महिलाएं हैं।' कवि ने 'हरिजन', 'खुदकशी', 'विषधर', 'एक बदनसीब लड़की' आदि कविताओं में सामाजिक अंधविश्वास और विषम परिस्थितियों को उजागर किया है। सुशील कुमार 'शीलू' की कविताओं में नारी चेतना से सम्बन्धित अनेक कविताएं है। 'असीस', 'खून भरी मांग', 'घूंघट', 'नौकरी चाहिए' इत्यादि कविताओं में कवि ने सामाजिक परम्पराओं एवम् रूढ़ियों द्वारा शोषित नारी का चित्र प्रस्तुत किया है–

'खत्म होती है वह जहाँ/पीछे है उसके अथाह अंधकार/और वहाँ एक सर्प चुपके से/उसके

मस्तिष्क में विष भरता है/और आने वाली पीढ़ियो का/जन्म से पूर्व कत्ल करता है।'[18]

'घाटे का शेयर', 'गोबर का उपला', 'भविष्य की सुरक्षा' कविताओं में स्त्री उपेक्षा को दर्शाया गया है। कवि ने उपेक्षित नारी की सामाजिक प्रताड़ना को दर्शाने का प्रयास किया है–

'किस्मत ही फूट गई/चार लड़कियों के बाद/पाँचवी भी लड़की / करमजली!!! / अफसोस सारे गाँव को है/रिश्तेदारों–दोस्तों की तो बस पूछिये मत/घर में मातम।'[19]

'प्रेम कहानी', 'दंड विधान', अंर्तरजातीय विवाह को स्वीकृति देती कविताएं हैं। इसी प्रकार 'शपथ–पत्र' पुरूष प्रधान समाज के विरूद्ध एक जंग है।

'घर से बाहर निकलते ही/तुम्हें मिलेंगे कुछ भूखे लोग,/वैसे तो वे अकसर खा–पीकर ही निकलते हैं/ पर इतना लजीज व्यंजन देखने के बाद/आ ही जाता है मुँह में पानी।'[20]

युवा वर्ग को संदेश–युवा देश का कार्यशील वर्ग होता है। देश के कर्णधार युवा है। युवा ही देश की उन्नति के मार्ग पर ले जाते हैं लेकिन बढ़ती हुई बेरोजगारी के कारण युवाओं को निराश होना पड़ा। क्योंकि युवा वर्ग को आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। आज का युवा अपने का कमजोर, कायर व असहाय महसूस करने लगा है। बेरोजगारी के कारण युवाओं में उमड़ते हुए उत्साह, विश्वास की जगह अनास्था व कुंठा ने ले ली। इसका परिणाम यह हुआ कि चोरी, मदिरापान, बलात्कार युवा राजनीति की पहचान बन गई। 'एक बदनसीब लड़की' में 'शीलू' जी ने गरीब व असहाय लड़की के जीवन संघर्ष को व्यक्त किया है। 'शीलू' जी ने इस कविता में दिखाया है कि किस प्रकार एक गरीब लड़की संघर्षशील परिस्थितियों का सामना करती है स्वयं को शोषण से बचाती है और खुद एक आदर्श बनकर दूसरों के लिए आदर्श प्रस्तुत करती है। 'मंजिल का रास्ता' कविता में कवि ने युवाओं को सचेत किया है कि प्रत्येक दिन की शुरूआत नई उमंग व नये उत्साह तथा जोश, स्फूर्ति के साथ होनी चाहिए।

'हर दिन/करें शुरूआत/नये इरादों के साथ!/अतीत के वादे/भविष्य के ख्वाब/पाने को बढ़ाओ हाथ/वर्तमान के साथ।/ पुरानी हार के मलबे पर/रखकर कदम/औरो की शक्ति के लिए अब मुझे इंतजार है।'[21]

'अब विद्रोह जरूरी है' में युवाओं के लिए संदेश है कि गली सड़ी परम्पराओं को तोड़ने का।

निष्कर्ष–निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि काव्य कवि–हृदय में उद्वेलित भावों का उच्छलन है जो मानव–जीवन के चित्र को अंकित करता है। सुशील कुमार 'शीलू' का काव्य भी ऐसा ही अनूठा चित्र प्रस्तुत करता है। इनके काव्य के कथ्य की समग्र–विशेषताओं पर दृष्टिपात करने के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों, साम्प्रदायिकता, जातिप्रथा, नारी शोषण आदि समस्याओं को कविताओं के कथ्य में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। प्रकृति के साथ कवि का प्रेम–सम्बन्ध है। उनकी प्रत्येक रचना स्वयं में एक ऐसा शुद्धिपत्र है जो हमारे व्यक्तित्व को स्वस्थ एवम् सुरूप बनाकर उसे विशुद्ध और मानवीय आभा प्रदान करना चाहता है। 'शीलू' जी के पास समाज को देखने की नई दृष्टि है। समाज के साथ आत्मीय सम्बन्ध है। कवि समाज के उत्पीड़ित–शोषित समाज से जुड़कर समाज संवेदना को अपनी रचनाओं में उभारता है। सुशील कुमार 'शीलू' के काव्य के कथ्यगत–वैशिष्ट्य का अध्ययन करने पर इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कवि ने समाज में व्याप्त कुरीतियों, अन्धविश्वासों, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, नारी शोषण आदि से सम्बन्धित समस्याओं को अपनी कविताओं का आधार बनाया।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सुशील कुमार 'शीलू' 'गठबन्धन' पृ. 11 2. वही, पृ. 12 3. वही, पृ. 12 4. वही, पृ. 14 5. वही, पृ. 15 6. सुशील कुमार 'शीलू' 'नई संस्कृति का भ्रूण' पृ.48 7. सुशील कुमार 'शीलू' 'गठबन्धन' पृ. 51 8. सुशील कुमार 'शीलू' 'नई संस्कृति का भ्रूण' पृ. 62 9. वही, पृ. 12 10. विभू कुमार, 'तालों में बंद प्रजातंत्र', पृ. 45 11. सुशील कुमार 'शीलू' 'गठबन्धन' पृ. 15 12. सुशील कुमार 'शीलू' 'गठबन्धन' पृ. 13 13. सुशील कुमार 'शीलू' 'नई संस्कृति का भ्रूण' पृ. 62 14. मानक हिन्दी कोष, पृ. 274 15. सुशील कुमार 'शीलू' 'नई संस्कृति का भ्रूण' पृ. 62 16. वही, पृ. 64 17. सुशील कुमार 'शीलू' 'शपथ पत्र' सम्पादक डॉ. तेज सिंह पृ. 80 18. सुशील कुमार 'शीलू' 'खून भरी मांग' सम्पादक डॉ. रचना निगम, पृ. 14 19. वही–, 'नई संस्कृति का भ्रूण', पृ. 64 20. सुशील कुमार 'शीलू', 'शपथ पत्र',सम्पादक डॉ. तेज सिंह, पृ. 18 21. सुशील कुमार 'शीलू', 'नई संस्कृति का भ्रूण', पृ. 25